International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

संसर्ग द्वारा व्यक्तितत्त्व वकासः एक वमर्श

डॉ. अतुल कुमार भीखा भाई उनागर
आ सस्टन्ट प्रॉफेसर, संस्कृत वभाग
भाषा साहित्य भवन गुजरात यूनिव र्सटी अहमदाबाद

संसर्ग नामक समृ द्ध एक वशेष सम्पत्ति हैं। अमूल्य वरासत हैं और ईश्वर का दिया हुआ वशेष तोहफा हैं । व्यक्ति जब अपने आपकी अनेक मापदंड़ो द्वारा तुलना करता हैं, तब उसे अपनी समृद्धी का अहसास होता हैं। जैसी सोहबत वैसा परिणाम मूश्किल से मूश्किल लगता कार्य अच्छी सोहबत केकारण पूर्ण कया जा सकता हैं।[1] और उस पर जोर डाला गया हैं क महाजनों का संग होने से जिसका वकास संभव नहीं हैं।

महाजनस्य संसर्गः, कस्य नोन्नतिकारकः।
पद्मपत्रस्थितं तोयम्, धत्ते मुक्ताफल श्रयम्॥

हम सब सामाजिक हैं, समाज के बीच रहते हैं। अनेक प्रकार के लोगों के वृत्त से हम घिरे हुए होते हैं। सुबह से लेकर रात तक अनेक प्रकार के लोगों के सकारात्मक एवं नकारात्मक वचारों का भोग बनते हैं और फर उसी वचारों का असर हमारे अवचेतन मन में बैठ जाता हैं। सज्जन कभी भी अपने स्वभाव से वपरित आचरण नहीं करते।
उदयति यदि भानुःपश्चिमे दिग्विभागे वकसति यदि पद्मं पर्वतानां शखाग्रे। प्रचलति यदि मेरुःशीततां याति वह्निर्न भवति पुनरुक्तं भा षतं सज्जनानाम्॥ इससे शास्वत एवं सदाचारी व्यक्तियों के ही संसर्ग में रहना चाहिए। आ खर खुद की रक्षा हमारे होने के भाव से ही होती हैं।[2] इ स लए कहा गया हैं क गुणीजनों को ही मत्र बनाना चाहिए।

अ प संपूर्णता युक्तैः कर्तव्या सुहृदो बुधैः।
नदीशः परिपूर्णोऽ प चन्द्रोदयमपेक्षते।।

जाने अनजाने में हमें पता भी नहीं होता और हम ऐसे वचार की कनाई करते हैं, अर्थात ग्रहण करते हैं। हमारा मनोबल चाहे कतना भी मजबूत हो, फर भी सामनेवाले व्यक्ति के वचारों की असर को रोक नहीं पाते। इल्ली और ततैया अपने संसर्ग द्वारा इल्ली की जाति को बदल सकता है।

जैसा संग वैसा रंग और जैसी सोहबत वैसी असर कहावत सबने सूनी ही होगी। गुणायन्ते दोषाःसुजनवदने। हम चाहे कसी भी पद पर हो ले कन कुसंग के कारण हमेशा अप वत्र ही रहेंगे।(3) मुर्खो को समझाना असंभव हैं।

अज्ञः सुखमाराध्यः सुखतरमाराध्यते वशेषज्ञः। ज्ञानलवदु र्वदग्धं ब्रह्मा प तं नरं न रञ्जयति।। इस लए अज्ञानी लोगों की सोहबत नहीं करनी चाहिए। सज्ज्न बिना बोले हीं चुपचाप अपना कार्य करते हैं। गर्जति शरदि न वर्षति वर्षति वर्षासु निःस्वनोमेघः। नीचो वदति न कुरुते न वदति सुजनः करोत्येव॥ कर्मवार व्यक्ति के साथ जीवन व्यतित करना चाहिए। वचारों के आदान-प्रदान से ही वकास होता हैं। सज्जनों की सोहबत करने से मनुष्य का मन धर्म में लगता हैं।(4)

गुरुशुश्रूषया वद्या पुष्कलेन धनेन वा।
अथवा वद्यया वद्या चतुर्थो न उपलभ्यते।।

इस सद्धांत को कुछ अलग नजरिये से खोजने की को शश करते हैं। हर एक व्यक्ति एक अलग अवस्था तक पहुंचा हुआ होता हैं। वक सत व्यक्ति हमेंशा ऊँचे से ऊँची अवस्था को पाने की यात्रा में लगा रहता हैं। हम सब भी अभी एक वशेष प्रकार की अवस्था में पहुंचे हैं और हमारे वक सत होने की यात्रा चलती ही रहती हैं। इस यात्रा के दौरान शा मल साथी मत्र भी वक सत होते हैं। स्नेहयुक्त संपर्क से ह्रदय परिवर्तन संभव होता होगा। दर्शने स्पर्शणे वा प श्रवणे भाषणे ऽ प वा। यत्र द्रवत्यन्तरङ्गं स स्नेह इति कथ्यते॥

सबकी अपनी अपनी एक व शष्टगति होती हैं। यहाँ एक वशेषबात पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए क क्या हम हम से भी उच्च अवस्था पर पहुंचे सफल व्यक्तियों के हम मुसा फर हैं..? जिसे हमने आदर्श नाम दिया हैं। इस लए तो नीतिशतक में व्यक्ति के भेद बताये गये हैं।जैसे क-

प्रारभ्यते न खलु वघ्नभयेन नीचैःप्रारभ्य वघ्न वहिता वरमन्ति मध्याः।
वघ्नैः पुनः पुनर प प्रतिहन्यमानाः, प्रारभ्य चोत्तमजनाः न परित्यजन्ति।।

(नीतिशतकम् 26)

म क्षका व्रण मच्छन्ति धन मच्छन्ति पा र्थवाः।
नीचाः कलह मच्छन्ति सन्धि मच्छन्ति साधवः॥

यथा धेनु सहस्रेषु वत्सो वन्दति मातरम्।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

एवं पूर्वकृतं कर्मकर्तारमनुगच्छति॥

यदि सन्ति गुणाः पुंसां वकसन्त्येव ते स्वयं।
न हि कस्तूरिकामोदः शपथेन वभाव्यते।।

हम सब ऐसे परिपक्व व्यक्तियों के संसर्ग की छाया में वकसत हो रहे हैं, जहाँ वकसत होने की अनंत संभावनाएँ हो। यदि आप का उत्तर हाँ है तो आप असल में संसर्गनामक समृद्धी को प्राप्त करते हैं।यह एक ऐसी यात्रा के मुसाफर हैं जिनके मनकी हर परिस्थिति में समानता हो।
न प्रहृष्यति सम्माने नापमाने च कुप्यति। न क्रुद्धः परुषं ब्रूयात्स वै साधूतमः स्मृतः।। हमउसेबारबार मलनेकेकारणखुदभीउनकेजैसेबनजातेहैं।

सत्संग नामक शब्द से हम सब परिचत ही हैं ।यह शब्द आध्यात्मिकता के साथ जुडा हुआ हैं। परंतु वास्तव में तो वहव्यावहारिक जीवन का ही शब्द हैं। सत्संग हमारे खुद के अस्तितत्त्व पर आधारित हैं। जो सामान्य इनसान को प्राप्त नहीं होता।
पूर्वार्जितानि पापानि नाशमायान्ति यस्य वै। सत्सङ्गतिर्भवेत्तस्य नान्यथा घटते हि सा।।खास कर एक बात ध्यान देकर समझने की जरूरत हैं क समान आचरण वाले ही एक-दूसरे की सोहबत करतेहैं।

मृगा मृगैः संगमनुव्रजन्ति गावश्च गोभिस्तुरगास्तुरंगैः।
मूर्खाश्च मूर्खैः सुधयः सुधीभिः समानशीलव्यसनेषु सख्यम्॥

परिपक्व युवा मत्रों को योग्य जीवन साथी पसंद करने का निर्णय भी संसर्ग की समृद्ध को पाने की ही एक कोशश हैं।
न्याय्यात पथःप्रवचलन्ति पदं न धीराः। आप सब इस सत्य के साथ सहमत होंगे क अपनी सोहबत ही अपनी पसंद होती हैं। एक वेद वचन हमेशा याद रखना चाहिए क सत्य के मार्ग पर दुर्जन कभी नहीं चलते।(5) यह भी स्वीकारोगे क अनेक लोग ऐसी सोहबत बनाते हैं क जिसमें सामनेवाले के कुक्कुट पर सवार हैं। इस लए कहा गया हैं क एक बगुले ने हंसों की टोली पर राज कया।
बका हंसा भूत्वा कथमप गता मानसजलं समे हंसा ज्ञात्वा कपटमप मूका: समभवन्। वरोधाभावात्ते द्वजपति वलासे वलसता: फलेनैते हंसा नयनजलपानव्यसनिन:।।

इस तरह अधर्मी लोग सज्जनों पर शासन करते हैं और फर उनकी हाँ में हाँ करते हैं। उनके लए हुए फैसले को स्वीकारते हैं और उस पर टिके रहते हैं। प्राणान्तेऽ पप्रकृतिवकृति र्जायते नोत्तमानाम्।

Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

कुछ लोगों को तो गुलामी ही अच्छी लगती हैं। इस लए तो आजकल धूर्त गुरूओं का का फला खुला हुआ हैं। जिस तरह फूलों के साथ रहकर कपड़े, पानी, तेल और म ी में सुगंध लग जाती हैं, उसी तरह कुसंग और सद्संग की भी असर होती हैं।[6] हमें इन दोनों में से कसी भी कसी भी प्रकार क परिस्थिति के गुलाम तो नहीं हैं ना ? यह आत्म निरीक्षण करने की जरूरत हैं।[7] क्यों क सच्चे मत्र के गुण यह हैं जैसे क- शु चत्वं त्या गता शौर्यं सामान्यं सुखदुः खयोः। दा क्षण्यं चानुरक्तिश्च सत्यता च सुहृद्गुणाः॥ऐसे मत्रों के साथ जीना चाहिए। अंततः संसर्ग में दोनों पक्ष में स्वतन्त्रता होनी अनिवार्य हैं और परस्पर वकास भी जरूरी हैं। यदि ऐसा हैं तो सच में आप संसर्ग नामक समृ द्ध को प्राप्त करते हैं।[8] शास्त्रों में महापुरूषों के संसर्ग को दुर्लभ माना गया हैं।दुर्लभं त्रयमेवैत त्देवानुग्रहहेतुकम्। मनुष्यत्वं मुमुक्षुत्वं महापुरुषसंश्रयः ॥

शेख सादी ने कहा हैं क- अगर तु अक्लमंद और हों शयार हैं तो जाहिलों की संगति मत कर।[9] कई बार सामनेवाले की छाया बोझ रूप भी साबित हो ऐसा भी बन सकता हैं। अपात्रं पात्रतां याति यत्र पात्रं न वद्यते। जैसे क कहे जानेवाले ज्ञानीजनों के वचार, वाणी और वर्तन में एकरूपता न होने के कारण उसकी अवास्त वकता और बनावटी जिंदगी की असर कुछ अलग ही परिणाम लाती हैं। इस लए हमें संसर्ग पा लेनेवाले बड़ों की एकसूत्रता की खात्री कर लेनी चाहिए। न वै सुखं प्राप्नुवन्तीह भन्नाः। बिना आचरण काला ज्ञान वर्ज्य हैं, यह याद रखना। ऐसे लोगों के संसर्ग से हमारा दम घुटने लगे और ज्यादा समय के पश्चात भी वैसे के वैसे ही रहे तो ऐसा संसर्ग बोझ रूप ही बना रहेगा। वकसने की जहाँ असीम सीमाएँ होती हैं, खुले आसमान में उड़ने की आजादी होती हैं।

दुःखेनासाद्यते पात्रम्।सद् पात्रों को ढूँढना मूश्किल हैं कन्तु असंभव नहीं। इस तरह संसर्ग में आजादी अनिवार्य हैं। तभी वह संसर्ग समृ द्ध मली कहलाएगी।

संसर्ग में उम्र का होना अनिवार्य नहीं हैं। असल में तो अनुभव के कारण परिपक्व व्यक्तितत्त्व का होना ही महत्त्त्वपूर्ण हैं। कई बार हमसे कम उम्र होने के पश्चात भी हमसे ऊँची अवस्था पर पहुंचे हुए हो ऐसा भी बन सकता हैं। हमें हमेशा यह बात याद रखनी चाहिए क सामनेवाले लोगों को वचार, उनकी भाषा और उनका वर्तन हमारा दर्पण हैं। सतां सज्जनानां संगतिः।उसके प्रतिबिंब ही हमें जीना सखाते हैं। ऐसे एकसूत्रतावाले महाजनों का होना ही व्यक्ति को वंदन करने का मन हो।

संसर्ग के मापदंड से हम खुद का स्व मूल्यांकन करे तो आज हम जिन लोगों के सहवास या संसर्ग में जीते हैं, वैसे उदाहरण के तौर पर खास व्यक्तियों के नाम लए। फर उसे दस में से कुछ अंक दे और उसे जोडे और उसे आठ से भागाकार करें। जो उत्तर आया वह आपके लए तय हुआ। अर्थात आज आप कस अवस्था को प्राप्त कए हुए हैं, वह आपके सहवा सयों के कारण हैं और आगे

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

भी आपको ऊँचे से ऊँची अवस्था प्राप्त हो तो वह भी अपने उस समय के सहवास के कारण ही प्राप्त करेंगे और इस लए मनुष्य को हमेशा वद्वान व्यक्तियों के सहवास में रहना चाहिए।[10]

आपको सहवास नामक समृद्धी की कल्पना का अहसास जरूर हुआ होगा। हम खुद को वक सत करें। आज हम जिस भू मका में रहेंगे। हमारे संसर्ग में अनेक लोग वक सत हो रहे हैं। वह याद रहें। हमारी प्रौढ़ता के संसर्ग का लाभ अनेकों को मले ऐसी शुभकामना सह।

संदर्भसूचीः-

(01) असज्जनः सज्जनसङ् गसङ्गात्करोति दुःसाध्यम प साध्यं।
पुष्पाश्रयाच्छंभु शरोऽ धरूढा पपी लका चुम्बति चन्द्रबिम्बम्।।
महासुभा षत संग्रह (3657)

(02) न परःपापमदत्ते परेषां पापकर्मणाम्।
समयो र क्षतव्यस्तु सन्तश्चारित्रभूषणाः॥
रामायण 06/113/44 ॥

(03) निष्णातोऽ प च वेदान्ते वैराग्यं नैति दुर्जनः।
चरं जलनिधौ मग्नो मैनाक इव मार्दवम्।।
सुभा षत रत्नाकर

(04) तस्य साधुसमारम्भाद बु द्धरधर्मेषु राजते। महाभारत, वनपर्व, 210/12

(05) ऋतस्य पन्थां न तरन्ति दुष्कृतः।।ऋ.सं. 09/73/06

(06) वस्त्रमापस्तिलान भू मं .... महाभारत, वन 01/24

(07) न स्वातन्त्र्यसमं सौख्यम्।।
पद्मपुराण. 04/88/50

(08) अबन्धुरबन्धुतामेति नैक्टयाभ्यास योगतः।
यात्यनभ्यासतो दूरात्स्नेहो बन्धुषु तानवम्।।
योगवा शष्ठ६/उ/६७/२९

(09) अमर सूक्ति कोश हिन्दी पॉकेट बुक्स पाना. न. 292

(10) सत्संनिकर्षे परिवर्तितव्यं वद्या धकाश्चा प निषे वतव्याः।अनु. 96 दा. या.